जुलाई से सभी स्कूल, कालेज खुल गये हैं। पढ़ाई भी तेजी से प्रारम्भ हो गई है लेकिन बाजार में कापियों और पुस्तकों का अभाव सबको हताश कर रहा है।

पाठ्य-पुस्तकों पर डेढ़ सौ प्रतिशत और दो सौ प्रतिशत तक ब्लेक हो रहा है। अभिभावक परेशान हैं, साधारण परिवार के लोग अपने बच्चों को पढ़ा सकने में असमर्थ हैं।

छात्रों के प्रवेश की भी एक समस्या हो गई है। स्कूलों में लम्बे दान लिये जा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी अव्यवस्था कभी देखने और सुनने को नहीं मिली। अतः मैं आपके माध्यम से आग्रह करूंगा कि अविलंब किताबों और कापियों को ब्लैक करने वाले लोगों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाये और विद्यार्थियों को सस्ते मूल्य पर किताबें और कापियों को उपलब्ध कराया जाए तथा साथ ही छात्र-छात्राओं के प्रवेश के लिए दान और चन्दा की राशि लेना जुर्म करार कर शिक्षा मंदिरों को पवित्र बनाया जाए।

(x) Need for Development of Paradeep Port

SHRI BRAJAMOHAN MOHANTY (Puri) : Sir, although Paradeep Port in Orissa is one of the major ports of the country, it is not in a healthy condition. The loss and profit account is not encouraging The cargo handling is much below the capacity. The Port has silted up and now existing depth is reported to be around 25 to 26 feet. Number of vessels are not being able to negotiate the Port which results in heavy loss to the Port The dredging arrangement made by the Port Authority is quite inadequate The Port authorities approached the Government for financial sanction for having a dredger which has not been complied with. During the last six months, a number of ships have been returned because of the low draught of the Port.

The development of Orissa very much depends upon the healthy growth of the Paradeep Port. The economy of Orissa is inter-linked with the Port but the condition of the Port is going from bad to worse. Immediate efforts are necessary to bring the Paradeep Port to its desired level of growth and potentiality.

(xi) Need to extend the relaxation of height for recruitment in army to Muslims and backward classes

श्री रशीद मसूद (सहारनपुर): मोहतरम, हिन्दुस्तानी फौज में सिपाही की भर्ती के लिए राजपूत, अहीर, जाट और गूजर बिरादरियों की ऊंचाई 170 से०मी० मुकर्रर थी और उनके अलावा दूसरी कोमों की ऊंचाई 164 से०मी० मांगी जाती थी लेकिन अब गिजाई कमी की वजह से लोगों की लंबाई कम होने लगी जिसकी वजह से मंद दर्जावाला चारों कौमों के लिए जरूरी ऊंचाई (वद की) को घटाना तो दुरुस्त है। मगर जिन कौमों के लिए पहले 164 से० मी० ऊंचाई फौज में भर्ती होने के लिए जरूरी थी, उनकी भी फौज में भर्ती की जरूरी ऊंचाई घटानी चाहिए थी। मगर सरकार ने बजाय उन सबके साथ रियायत करने के बाकी सब कौमों की फौज में भर्ती की जरूरी ऊंचाई 167 से०मी० बढ़ा दी है, जो उन कौमों के साथ ज्यादती है। मेरी सरकार से दरख्वास्त है कि जहां उसने गूजर, जाट, राजपूत, अहीर की फौज में भर्ती की ऊंचाई कम की है, वहां यह सहूलियत दूसरी कौमों को भी दी जाये। मसलन हरिजन और दूसरी पिछड़ी बिरादरियां और मुसलमान ताकि उनके साथ इन्साफ हो।